National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(66): 31-34
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

रीना पन्त
शोधार्थी,
द ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

शोध-निर्देशक
डॉ. शोभा त्रिपाठी
एसोसिएट प्रोफेसर,
द ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

Correspondence:
रीना पन्त
शोधार्थी,
द ग्लोकल विश्वविद्यालय,
सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

विश्व में पत्रकारिता का उदय एवं भारत में पत्रकारिता का प्रारम्भ

रीना पन्त, डॉ. शोभा त्रिपाठी

सारांश

पत्रकारिता आधुनिक सभ्यता का एक अभिन्न अंग है एवं प्रमुख व्यवसाय है। समय और समाज के सन्दर्भ में सजग रहकर जनता में दायित्व बोध कराने की कला को ही पत्रकारिता कहा जाता है। असत्य अशिव और असुंदर पर 'सत्यं शिवं सुन्दरम' की शंखध्वनि ही पत्रकारिता है।

पत्रकारिता को अंग्रजी भाषा में 'जर्नलिज्म' कहा जाता है, जोकि जर्नल से निकला है और जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। जर्नल से बना जर्नलिज्म एक व्यापक शब्द है। ऐसा माना जाता है कि विश्व में पत्रकारिता का प्रारम्भ सन् 131 ई. से पूर्व रोम में हुआ था। कुछ लोग चीन के पत्र 'पीकिंग गजट' नामक पत्र को भी पत्रकारिता का प्रारम्भ मानते हैं। रोम के जूलियस सीजर नामक पत्रकार ने 'एक्टा डाउर्ना', 'एक्टा सिनेट्स', 'एक्टा पब्लिका' नामक हस्तलिखित पत्र प्रकाशित किये। एक्टा डाउर्ना में सरकारी घोषणाओं से सम्बन्धित दैनिक समाचार, एक्टा सिनेट्स में सीनेट की कार्यवाही और भाषण वाले समाचार तथा एक्टा पब्लिका में आम जनता से सम्बन्धित सूचनाओं को प्रदर्शित किया जाता था। 15 वीं शताब्दी में 'गुटेनवर्ग' ने जर्मनी में प्रेस की स्थापना की।

समचार पत्रों का प्रारम्भिक रूप सन् 1526 ई. में नीदरलैण्ड के 'न्यूजाइटुंग' में मिलता है। इसके पश्चात् सन् 1615 ई. में जर्मनी से 'फ्रैंकफुर्टेर जर्नल', सन् 1631 में फ्रांस से 'गजट द फ्रांस', सन् 1666 ई. में इंग्लैण्ड से 'लनुन गजट' सन् 1667 ई. में बेल्जियम से 'गजट बैनगट' एवं सन् 1690 ई. में अमेरिका से 'पब्लिक ऑकरेन्सेज' नामक पत्रों का प्रकाशन हुआ।

मुख्य शब्दः- पत्रकारिता, प्रेस, जर्नल, जर्नलिज्म, असत्य, अशिव, असुंदर, सत्यं, शिवं, सुन्दरम, शंखध्वनि, दायित्व बोध, दैनिक।

प्रस्तावना

पत्रकारिता को लोकतन्त्र का चैथा स्तम्भ माना जाता है। पत्रकारिता का प्रारम्भ प्रौद्योगिकी एवं व्यापार के साथ हुआ। इसमें समाचारों को जमा करना, लिखना, रिपोर्ट करना, सम्पादित करना तथा प्रस्तुतीकरण आदि सम्मिलित हैं। आज के युग में समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन एवं अन्य चैनल, वेब सिरीज आदि पत्रकारिता के अनेक माध्यम हो गये हैं।

भारत मे प्रथम प्रिंटिग प्रेस 6 सितम्बर 1556 ई. में गोवा में लगायी गयी थी एवं प्रथम समाचार पत्र इसके लगभग 200 साल के बाद सन् 1776 ई. में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी विलियम बोल्ट द्वारा प्रकाशित किया गया, जोकि अंग्रजी भाषा में प्रकाशित किया गया। यह समाचार पत्र तत्कालीन कम्पनी एवं सरकार के समाचारों को फैलाता था। सरकार को जब इसकी खबर लगी तो 18 अप्रैल सन् 1868 ई. को कम्पनी की ओर से विलियम बोल्ट को बंगाल को खाली कर इंग्लैण्ड जाने का फरमान जारी कर दिया गया।

इसके बाद 29 जनवरी सन् 1780 ई. में जेम्स ऑगस्ट हिक्की द्वारा 'बंगाल गजट', जिसे कि 'कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर' के नाम से भी जाना जाता है, नामक पत्र का प्रकाशन किया। यह एक सप्ताहिक समाचार पत्र था। इस पत्र के प्रथम अंक में हिकी ने प्रथम और अंतिम मुद्रक के रूप में अपना परिचय देते हुए लिखा किः-

"A weekly political and commercial paper open to all parties but influenced by none"

यह सप्ताहिक समाचार पत्र आर्थिक एवं राजनीतिक विषयों से सम्बन्धित था, जिसका सम्बन्ध हर दल से था परन्तु यह पत्र किसी से प्रभावित नहीं था और स्वतन्त्र रूप से कम्पनी के कर्मचारियों एवं अधिकारियों की नीतियों की खुलकर आलोचना करता था। इसके परिणाम स्वरूप 14 नवम्बर सन् 1780 ई. को गवर्नर जनरल ने बंगाल गजट को डाक सुविधा से वंचित कर दिया एवं कुछ समय बाद पत्र के प्रकाशन के सभी अधिकार भी समाप्त कर दिये गये। तत्पश्चात् जून1781 ई. में उनको रु. 5000 का जुर्माना लगाकर जेल भेज दिया गया। जेल में उन्हें अत्यधिक यातनाएँ दी गयीं। इन सभी प्रताड़नाओं ने हिक्की को और भी अधिक मजबूत एवं अडिग बना दिया तथा जेल में रहकर भी वे पत्र का निरन्तर सम्पादन करते रहे। अंत में सरकार एवं कम्पनी के अत्यधिक दबाव के बाद उनको बंगाल छोड़कर जाना पड़ा। इतनी यातनाएँ सहने के बाद भी हिक्की ने भारत में पत्रकारिता का शुभारम्भ किया, जोकि एक ऐतिहासिक तथ्य है।

सन् 1780 में मेसेर्स बी.मेसनिक एवं पीटर रोड ने 'इंडिया गजट' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन शुरु किया, जिसे भारत का द्वितीय समाचार पत्र माना जाता है। इसके पश्चात भारत में इंडिया गजट, कलकत्ता गजट (जिसका प्रकाशन सरकार के संरक्षण में हुआ) बंगाल जर्नल एवं मासिक पत्रिका ओरिएन्टल मैग्जीन ऑफ कलकत्ता नामक चार सप्ताहिक समाचार पत्र एवं एक मासिक पत्रिका के निकलने का क्रम प्रारम्भ हो गया, सन् 1785 में मद्रास से प्रथम समाचार पत्र 'मद्रास कूरियर' के नाम से सरकारी मुद्रक - रिचर्ड जीनसन द्वारा प्रकाशित किया गया, सन् 1795 ई. में 'मद्रास गजट' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया, जिसके संपादक आरु विलियम्स थे, देखा जाए तो- सन् 1780 से 1857 के मध्य लगभग 200 पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित की गयी, जिनमें से बहुत सारे पत्र शीघ्र सरकार के दबाव के कारण बन्द हो गये, सरकार के अत्यधिक दवाव के कारण कुछ ही समाचार पत्र लंबी अवधि तक प्रकाशित होते रहे, यथा- 'इंडिया गजट" (1980-1834), "कलकत्तागजट (1784-1878), 'एशियाटिक मिरर"- (1788 - 1820), "द कलकत्ता मॉर्निंग पोस्ट (1799-1878), "द ओरिएंटलम्टार" (1793 - 1820), "द कलकत्ता मंथल जर्नल " (1794 - 1841), "द बंगाल हरकाक" (1795-1857) आदि शामिल हैं,

सन् 1818 ई. में जेम्स सिल्क बर्किंघम " कलकत्ता जर्नल " नामक समाचार पत्र के संपादक बनकर भारत आये, वे बहुमुखी प्रतिभा के पत्रकार थे, जिन्होंने अपनी प्रतिभा से पत्रकारिता में तेजस्विता का संचार किया, वे भारतीय पत्रकारिता के प्रथम पथ प्रदर्शक थे, जिन्होंने भारतीय पत्रकारिता को सही राह दिखाई। उनके प्रयासों मे भारतीय समाचार पत्रों में साफ सुथरी राजनीतिक, वाणिज्यिक, साहित्यिक समाचारों एवं विचारों को प्रकट करना प्रारम्भ कर दिया गया, उनका मानना था कि एक संपादक का मुख्य कर्तव्य" गवर्नरों को उनके कर्तव्यों के प्रति सचेत करना, उनके दोषों के बारे में चेतावनी देना तथा अप्रिय सत्य घटना को उजागर करना है." उनकी सच्चाई और प्रतिभा सरकार को रास नहीं आई और सन् 1828 में उन्हें देश छोड़ने के आदेश दे दिये गए। इस प्रकार देखा जाए तो भारत में पत्रकारिता को प्रारंभ करने का श्रेय अंग्रेजों को ही जाता है। इसलिये भारतीय पत्रकारिता के ज्यादातर पत्रकार विदेशी थे, जिनका मुख्य उद्देश्य ईस्टइंडिया क. के हितो कि रक्षा करना एवं ईसाई धर्म का प्रसार करना था।

भारतीय पत्रकारिता का प्रारंभ :

भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ करने वाले पत्रकार का श्रेय राजा राममोहन राय को जाता हैं, इन्होंने सर्वप्रथम 'ब्रह्मौनिकल मैग्जीन' नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारंभ किया, इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य ईसाईयों की वैचारिक दासता का खुलकर विरोध करना था, इस मैग्जीन में राजा राममोहन राय 'शिव प्रसाद शर्मा' के नाम से लिखते थे।

सन् 1821 में राजा राममोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' नामक बंगला सप्ताहित समाचार पत्र का प्रकाशन प्रारंभ किया, इस पत्र का मुख्य उद्देश्य 'सती प्रथा' का विरोध एवं स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देना था, इसके पश्चात उन्होंने फारसी में 'मिरात-उल-अखवार' निकाला, जिसमें उन्होंने पत्रकारिता के लक्ष्यों को उजागर किया। अधिक तेजस्वी होने के कारण इसे अंग्रेजों के कोपभाजन का शिकार बनना पड़ा एवं 4 अप्रैल 1823 को इसका अंतिम संस्करण निकाला गया, जिसके पश्चात यह पत्र इसका प्रकाशन भी बंद हो गया।

30 मई 1826 को हिंदी का प्रथम साप्ताहिक पत्र 'उदन्ड मार्तण्ड' का प्रकाशन श्री युगल किशोर शुक्ल द्वारा कलकत्ते के कोलू टोला

नामक स्थान से किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य हिन्दी एवं हिंदीवासियों का हित था।

प्रतिदिन मंगलवार को छपने वाले इस पत्र के शीर्षक के नीचे संस्कृत की पंक्तियाँ लिखी जाती थी:-

दिवाकान्त कान्ति विनाध्वांतगन्तं,
न चाप्नोति तद्वज्जगत्यज्ञ लोकः।
समाचार सेवा मृतेज्ञत्वमाप्तं,
न शक्नोति तस्मात्करोमीति यत्नं॥

लगभग डेढ़ वर्ष तक चलने वाले इस साप्ताहिक पत्र को 4 दिसं. 1827 ई. को धन के अभाव में बन्द करना पड़ा, जिसकी अंतिम पंक्तियाँ है:-

आज दिवस लौं उग चुक्यी मार्तण्ड उदन्त।
अस्तांचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।

इसके बाद अंग्रेजों के शासनकाल में कई पत्र प्रकाशित किये गये -

1861 में बंबई से 'टाइम्स ऑफ इंडिया' ब्रिटिश सरकार की नीतियों का समर्थन करता था

1865 में इलाहबाद से 'पायोनियर'- भूस्वामी और महाजनी तत्वो का पक्षधर था

1868 में 'मद्रास मेल'- यूरोपीय वाणिज्य समुदाय का पक्षधर था

1875 में 'कलकत्ता स्टेट्समैन'- सरकार एवं भारतीय दोनों की ही आलोचना करता था

1876 में लाहौर से 'सिविल एण्ड मिलटरी गजट' नामक पत्रों का प्रकाशन हुआ, जो सभी अंग्रेजी दैनिक ब्रिटिश शासनकाल में जारी रहे, एवं अंग्रेजी शासन को नितियों एवं कार्यक्रमों का समर्थन करते थे।

इन सभी के अतिरिक्त अमृत बाजार पत्रिका, बॉम्बेक्रानिकल, हिंदुस्तान टाइम्स, हिंदुस्तान स्टैंडर्ड्स, फी प्रेस जनरल आदि अंग्रेजी में छपने वाले दैनिक एवं साप्ताहिक पत्र थे, हिन्दू लीडर, इंडियन सोशल रिफॉर्मर आदि पत्र राष्ट्रीयता की भावना को अभिव्यक्त करने वाले पत्र थे।

भारत में हिन्दी पत्रों का विकास

भारत के प्रथम साप्ताहिक हिन्दी पत्र उदन्तमार्तंड से प्रेरणा लेकर कई अन्य समाचार पत्रों का प्रकाशन होने लगा, जिनमें से कुछ मुख्य समाचार पत्र निम्नवत हैं:-

1829 ई. में 'बंगदूत', बनारस अखबार 1845 ई., सुधाकर 1850 ई.'पयाम-ए-आजादी' 1857 ई., 'कविवचन सुधा' 1867 ई., हरिश्चन्द्र मैगजीन 1873 ई., बाल बोधिनी पत्रिका 1874 ई., हिन्दी प्रदीप' 1877 ई., 'भारत मित्र 1878 ई., सारसुधानिधि 1879 ई., उचितवक्ता 1880 ई., भारत जीवन 1884 ई. आदि,

इन सभी पत्रों का मुख्य उद्देश्य भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना की भावना को जागृत करना था, इस प्रकार समाज के दिग्दर्शन के शुभ लक्ष्य से प्रेरित होकर भारत में हिन्दी पत्रकारिता का विकास हुआ, इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता का विकास 20वीं शताब्दी तक भी चलता रहा और इस सदी में भी कई प्रमुख समाचार पत्र प्रकाशित किये गये, जिनमें से कुछ निम्न हैं:-

1907 ई. में ' हिन्द केसरी', 1910 ई. में कर्मयोगी', 1907 में 'अभ्युदय' (मदन मोहन मालवीय जी द्वारा प्रकाशित), 1913 ई. में ' प्रताप ' आदि।

इसके पश्चात पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन बढ़ता ही चला गया, सन् 1960 से 1970 ई. के अंतराल में पत्रकारिता के क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए, मीडिया के क्षेत्र में भी कई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले, समाचार के निर्माण और प्रसारण में कई प्रकार के नये तरीके अपनाये गये एवं पत्रकारों ने जनता तक जानकारी पहुँचाने के लिये नए तथा अधिक माध्यम ढूँढे,

सन् 1960 से 1970 के अंतराल में कई प्रमुख पत्रिकाओं की स्थापना हुई जैसे यथा:- (i) स्वराज्य एवं प्रतिरोध मुख्य रुप में लोकतंत्र तथा मनवाधिकार के पक्ष में लिखी गयी एक वेब पत्रिका थी एवं 1964 ई. में मुंबई से प्रकाशित हुई थी, यह पत्रिका हिंदी में लिखी गयी थी,

(ii) इण्डियन एक्सप्रेस→ यह एक अंग्रेजी समाचार पत्र था, जो कि 1932 में प्रकाशित किया गया, इस पत्र में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय खबरों के साथ विशेष रुप
से भारतीय राजनीति की खबरें छापी जाती थीं,

(iii) 'इंडिया टुडे→ यह सन् 1975 में तमिल भाषा में प्रकाशित किया गया, जोकि राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान आदि पर लिखी गयी सामग्री प्रदान करता था,

(iv) एक्सप्रेस ट्रिब्यून→ यह अंग्रेजी समाचार पत्र है, जो कि भारत के कई शहरों में प्रकाशित किया जाता था एवं इसमें राजनीति, क्राइम आदि से संबंधित समाचार प्रकाशित किये जाते थे,

इस प्रकार हिंदी पत्रकारिता के विकास का क्रम आज भी जारी है और आज भारत के अधिकतर हिस्सों से समाचार पत्र प्रकाशित किये जा रहे हैं।

निष्कर्ष:

सत्य के उद्गाता, स्वतन्त्रता के अनुष्ठाता, कर्तव्यनिष्ठ सम्पादकों की कलम ने भारत को अंग्रेजी शासन से मुक्त किया, अनेक प्रताड़नाओं को झेलकर, जेल यातनाओं से जूझकर समाज समर्पित पत्रकारों ने हिन्दी पत्रकारिता की आधारशिला रखी, पत्रकार अपनी विवेचना शक्ति के बल पर जन-मानस को एक सशक्त वाणी प्रदान करता है। इसलिए पत्रकारों को नरेश के नाम से भी पुकारा जाता है। एक सच्चा पत्रकार वास्तव में एक साहित्यकार की तरह ही भूमिका निभाता है। इस संदर्भ में हरिकृष्ण जौहर की कुछ पंक्तियाँ हैं :-

कट गयी जिन्दगी साहित्य की गुलकारी में,
तीसरापन है इसी बाग की फुलवारी में,
कागज ओढ़ना और बिछौना, कागज से ही खाना।
कागज लिखते-लिखते साधो, कागज में ही मिल जाना॥

संदर्भ सूची

(i) नारायण, पी. (2016). भारत में प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष: ऐतिहासिक संदर्भ और समकालीन प्रासंगिकता, नई दिल्ली, रुपा प्रकाशन।

(ii) राघवन, एस। (2005), भारत में स्थानीय प्रेस और सामाजिक सुधार, इंडियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, 204-210

(iii) सेन, ए. (2019), अतीत की आवाज, स्वतन्त्रता पूर्व भारतीय पत्रकारिता का एक अध्ययन। दिल्ली ओरिएंट ब्लैकस्वान,

(iv) हिंदी पत्रकारिता और स्वाधीनता संग्राम, डॉ० कृष्णदेव अरविन्द,

(v) हिंदी पत्रकारिता- विविध आयाम-डॉ० वेद प्रताप वैदिक

(Vi) हिन्दी पत्रकारिता - डॉ० कृष्ण बिहारी सिंह मिश्र

(v) हिन्दी पत्र-पत्रिकाएँ, उद्भव और विकास - डॉ० आर पी वर्मा